Unseasonal rain in the country

श्रीमती रजनी अशोकराव पाटिल (महाराष्ट्र): सर, पूरे विश्व में क्लाइमेंट चेंज की वजह से जो बदलाव आ रहा है, मैं उसके बारे में बात करना चाहती हूं। हमारे देश में हाल ही में बहुत बारिश हुई, उसमें सब कुछ बह गया, लोगों में हाहाकार मच गया। उसके बाद में चेन्नई में हुआ और हमारे महाराष्ट्र में भी बहुत बारिश हो गई। पहले तो बारिश नहीं हुई थी, इसलिए हम परेशान थे कि बारिश नहीं हो रही है, हम कैसे करेंगे, खास तौर पर किसान कैसे करेंगे और अब इतनी बारिश हो गई है कि किसान बहुत परेशान हैं। सर, इसके लिए सरकार की एक परमानेंट योजना होनी चाहिए, क्योंकि हम हर साल इस तरह की परेशानियों को देखते हैं। ये सब परेशानियां क्लाइमेंट चेंज होने की वजह से होती हैं। सर, क्लाइमेंट चेंज होने से इस तरह का असंतुलन होने से हाहाकार हो रहा है। इसमें हमें मदद देने के लिए सरकार 'प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना' लेकर आई है, लेकिन वह पूरी तरह से फंसी हुई बीमा योजना है। परसों ही मेरे खुद के क्षेत्र में बीड में 54 रुपए बीमा के आए, उसके खिलाफ लोगों ने जुलूस निकाला कि देखो, सरकार ने 54 रुपए फसल बीमा के हमको दिए हैं। सर, किसान सब तरफ से मारा जा रहा है, कभी पानी नहीं होता है, इसलिए परेशानी होती है, कभी सरकार से उनको एमएसपी नहीं मिलती है। वे कहते हैं कि अभी एमएसपी लीगलाइज़ नहीं हुई है, उसे लीगलाइज़ करना जरूरी है। अभी सरकार ने दो डिसीज़न ले लिए हैं, जिनका सीधा संबंध मेरे स्टेट के ऊपर पड़ता है। एक तो सरकार ने प्याज की निर्यात बंदी कर दी है, उसका भी परिणाम हमारे किसानों को भुगतना पड़ रहा है। दूसरा, उन्होंने इथेनॉल के प्रोडक्शन पर पाबंदी लगा दी है। हमारे यहां पर इथेनॉल के प्रोडक्शन की जो सौ-डेढ़ सौ फैक्टरीज़ लगी थीं, जिनमें इथेनॉल का प्रोडक्शन होता था और वह पेट्रोल में मिक्स होता था, उसकी वजह से पेट्रोल की कीमत कम रखने में मदद मिलती थी और हमारे किसानों के गन्ने का भाव अच्छा मिलता था। इन सब चीज़ों को ध्यान में रखकर पालिसी बनाना जरूरी है और ऐसा सरकार को करना चाहिए।

मुझे यहां पर सरकार से निवेदन करना है कि आज अगर किसानों के नाम के पीछे शहीद शब्द लग जाए, तो यह क्या हमारे देश को शोभा देता है! अगर मेरे पिताजी देश को आजाद कराने में शहीद हुए थे, तो मुझे अच्छा लगता है, लेकिन अगर किसी के पिता जी किसानों की लड़ाई लड़ते हुए शहीद हुए, वह भी आजाद हिंदुस्तान में, ऐसा इस देश में हो रहा है जिस पर ध्यान देना जरूरी है और मुझे लगता है कि जो आजकल का वातावरण है, इसमें लोगों को गुस्सा आ रहा है, हमारी जो यंग जेनरेशन है, वह frustrated है, इसका कारण भी यही है कि economically , उनके हाथ में कुछ नहीं है, क्योंकि एजुकेशन की कीमतें बढ़ गई हैं, प्राइवेट एजुकेशन हो गई है। सबसे बड़ी बात यह है कि प्रधान मंत्री जी जब 2014 में चुनकर आए थे, तो उन्होंने कहा था कि वे किसानों की इनकम को दोगुना करेंगे। किसानों की इनकम कहां दोगुनी हुई है, हमारे किसानों की फसल की कीमत दोगुनी नहीं हुई है। ...(**व्यवधान**)... उनकी फसल की कीमत कम हो रही है, आप क्या बोल रहे हैं? ...(**समय की घंटी**)... इसलिए मैं निवेदन करना चाहूंगी कि किसानों की समस्याओं पर सरकार ध्यान दे।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the matter raised by Shrimati Rajani Ashokrao Patil: Shrimati Jebi Mather Hisham (Kerala), Shri Neeraj Dangi (Rajasthan), Shri M. Shanmugam (Tamil Nadu), Shri Sant Balbir Singh (Punjab), Dr. Amar Patnaik (Odisha), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Dr. Sasmit Patra (Odisha), Shrimati Vandana Chavan (Maharashtra), Shri Abir Ranjan Biswas (West Bengal), Dr. Santanu Sen (West Bengal), Dr. V. Sivadasan (Kerala), Dr. John Brittas (Kerala) and Shri Sujeet Kumar (Odisha).

जो माननीय सदस्य किसी issue से अपने आपको सम्बद्ध करना चाहते हैं, वे अपने नाम की slip सीधे यहां पर भेज दें। श्री राकेश सिन्हा।

Demand to establish a Museum in the memory of the foreign nationals for their contribution in the struggle for Indian independence

श्री राकेश सिन्हा (नामनिर्देशित): उपसभापति महोदय, अभी हमने अमृत महोत्सव मनाया। उस अमृत महोत्सव का कितना प्रभाव पड़ा, हमारे इतिहास की समझ, इतिहास की जानकारी और इतिहास का फलक, इन तीनों का विस्तार हुआ। जो इतिहास सीमित दायरे में लिखा गया था, सीमित घटनाओं और सीमित नायकों के द्वारा बताया जाता था, उसका फलक बढ़ा है। इसके लिए मैं माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के इस ऐतिहासिक कदम के लिए उन्हें धन्यवाद देता हूं। मैं एक उदाहरण देता हूं, मैं एक सांसद के नाते इस अमृत महोत्सव में दो ऐसे लोगों को ढूंढ़ पाया, जिनका जन्म अपने पिता की शहादत के बाद हुआ था। उसमें एक वर्धा के अरविंद माल्पे, जिनके पिता गोविंद माल्पे 1942 में शहीद हुए थे। दूसरे, बेगुसराय के मेघौल निवासी शहीद कुमार, जिनके पिता राधा प्रसाद सिंह 1942 में शहीद हुए थे। इसी संदर्भ में मैं यह कहना चाहता हूं कि भारत का स्वतंत्रता आंदोलन सिर्फ राजनैतिक-आर्थिक उद्देश्य से और राजनैतिक-आर्थिक कारणों से तथा यह राजनैतिक-आर्थिक कुलीनों के द्वारा नहीं था, इसमें एक सांस्कृतिक चेतना थी, जिस सांस्कृतिक चेतना ने दुनिया भर के लोगों को आकर्षित किया। उसके कुछ नाम हैं, कुछ विदेशी नागरिक हैं, जैसे Madeleine Slade थी, जिनको महात्मा गांधी ने मीरा बेन कहा और उनको एक आध्यात्मिक नाम दिया। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में एक बड़ी भूमिका निभाई थी। वे 1942 और 1944 में जेल में रहीं। इनके अतिरिक्त कैथरीन हेल्मेन भी थीं। इन्होंने एक लंबे समय तक स्वतंत्रता आंदोलन में अपना योगदान दिया। हम इन्हें 'सरला देवी' के नाम से जानते हैं। हम बी.जी. हॉर्निमेन के बारे में जानते हैं कि वे एक बड़े पत्रकार थे। उन्होंने जलियाँवाला बाग कांड उजागर किया था। महोदय, 1913 में जब 'बॉम्बे क्रॉनिकल' शुरू हुआ था, तब वे उसके संपादक बने थे। 1911 में, जब बंगाल के यूनिफिकेशन का आंदोलन चला था, तब वे सड़कों पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ खड़े हुए थे। इसी तरह से सी.एफ. एंड्रयूज़, जिन्हें हम 'दीनबंधु' के नाम से जानते हैं, महात्मा गाँधी जी ने उन्हें दीनबंधु कहा था, उन्होंने देश के शोषितों और गरीबों के लिए बड़ा काम किया था और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के आर्थिक शोषण के खिलाफ एक बड़ा